"दांडी मार्च" पर स्मारक डाक टिकट जारी करने के अवसर पर प्रधान मंत्री का भाषण

दिनांक 5 अप्रैल, 2005
नई दिल्ली

यह हम सभी के लिए बड़े ही सम्मान और सौभाग्य की बात है कि आज हम यहां एकत्र होकर गांधी जी की 'दांडी यात्रा' की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर चार स्मारक डाक टिकटों का एक सेट जारी कर रहे हैं। गांधीजी ने भारत माँ की धरती से एक मुट्ठी नमक उठाकर अंग्रेजी शासन की जड़ों को हिला दिया था। स्वतंत्र भारत के सृजन का यह एक ऐतिहासिक क्षण था।

हमारे देशभक्त पूर्वजों ने दांडी में जो वीरता दिखाई उसके लिए मैं उन्हें प्रणाम करता हूं। मैं महात्मा गांधी को उनके साहस और दृढ़ संकल्प के लिए नमन करता हूं। दांडी यात्रा केवल आजादी के लिए ही एक यात्रा नहीं थी, बल्कि यह सबसे गरीब व्यक्ति के उत्थान; महिलाओं के विकास और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाने; छुआ-छूत को दूर करने; विरासत में मिले प्राकृतिक संसाधनों पर देश के लोगों का हक कायम करने; विभिन्न धर्मों के लोगों में एकता कायम करने और इन सबसे ऊपर, हमारी आध्यात्मिक शक्ति को फिर से जागृत करने के लिए भी एक यात्रा थी।

दांडी यात्रा के दौरान एक मुसलमान युवक ने गांधीजी से पूछा, "क्या आप केवल हिन्दुओं के सहयोग से या फिर अकेले अपनी कोशिशों से स्वराज पाना चाहते हैं?" गांधीजी ने जवाब दिया, "मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा कि मैं केवल अपने प्रयासों या केवल हिन्दुओं के सहयोग से स्वराज पा लूंगा। मुझे मुसलमान, पारसी, ईसाई, सिख और अन्य सभी भारतीयों का सहयोग चाहिए, यहा तक कि, अंगेजों का भी सहयोग चाहिए। इस यात्रा में आए सभी समुदायों के हजारों नर-नारियों की दुआ मेरे लिए इस लड़ाई में ईश्वर के वरदान के रूप में है। मुझे सभी कौमों के और सभी समुदायों के लोगों की मदद चाहिए।"

दांडी यात्रा की इसी याद का हमें उत्सव मनाना है। यह यात्रा सभी भारतीयों की एकता के लिए थी, चाहे वे किसी भी जाति, धर्म, भाषा या क्षेत्र से ताल्लुक रखते हों। महात्मा गांधी की यह खुली सोच आज भी समाज में सबको साथ लेकर चलने की हमारी धारणा की बुनियाद है। हम गांधी जी के जीवन और आदर्शों का अनुकरण करके तथा दांडी यात्रा के संदेश को आत्मसात करके उनके सपनों का भारत बना सकते हैं।

हमारा राष्ट्रीय आन्दोलन एक राजनीतिक आन्दोलन तो था ही, लेकिन साथ ही यह भारत के नैतिक और आध्यात्मिक पुनर्जागरण की आन्दोलन भी था। दांडी यात्रा की सालगिरह मनाते समय हमें यह याद रखना चाहिए कि हमारे नेता हमें न केवल विदेशी शासन से ही, बल्कि दूसरों के भरोसे रहने की हमारी सोच से भी मुक्ति दिलाना चाहते थे। वे चाहते थे कि हम में से हरेक अपने अधिकारों के लिए लड़े और खुद को भारतीय यानि भारत माँ का बेटा कहलाने में गर्व महसूस करे।

अपने पूर्वजों के शौर्य तथा बापू के संदेश को फिर से याद करके हम आज उस सच को दुबारा तलाशने की कोशिश कर रहे हैं, जिस पर गांधी जी ने अमल किया था। वह सच कि, मेहनत में ही इज्जत है; वह सच कि, आज़ादी में ही शान है; वह सच कि, हममें अपने उसूलों पर चलने का हौसला होना चाहिए; वह सच कि, हमें आत्म-निर्भर बनना चाहिए; वह सच कि हमें सभी के साथ मिलकर अमन-चैन और भाई-चारे से रहना सीखना चाहिए।

मुझे गर्व है कि हमारी सरकार इस अवसर पर इन स्मारक डाक टिकटों को जारी कर रही है।